प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय है - ''राही मासूम रजा के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ'' । राही मासूम रजा आधुनिक हिंदी साहित्य के बहुचर्चित साहित्यकार हैं । उनका साहित्य संसार उनके अनुभव जगत् का प्रमाण है । जब मैंने राही जी के 'आधा गाँव' उपन्यास को पढ़ा तब मैं अत्यंत प्रभावित हो गई । इसके उपरांत मैंने उनके अन्य उपन्यास भी ध्यान से पढ़े । उनके साहित्य ने मुझे गंभीरता से सोचने को प्रेरित किया । मेरे मन में राही जी के साहित्य के प्रति रुचि हो गई । मुझे महसूस हुआ कि राही जी एक सशक्त उपन्यासकार हैं ।

वस्तुतः राही जी अपने साहित्य में अपने अनुभव प्रस्तुत करते हैं । इसलिए उनके साहित्य द्वारा उनसे अधिक परिचित होने हेतु, मैंने उनके उपन्यासों का अध्ययन करना चाहा । राही जी के साहित्य के प्रति मेरी रुचि वृद्धिंगत हुई । गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से मिलकर मैंने विषय-चयन की चर्चा की तो उन्होंने इस विषय को सहमति दे दी, साथ ही मुझे प्रोत्साहित भी किया । मार्गदर्शक के रूप में आपका उपलब्ध होना मेरे लिए संतोषजनक ही नहीं तो परम् भाग्य की बात सिद्ध हुई । आपकी कृपा से ही मेरे शोध-कार्य के संकल्प का इन पृष्ठों पर साकार रूप सरलता से संभव हुआ ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए-

1. राही जी का जीवन किस प्रकार बीता ?
2. राही जी ने अपने जीवन में किस प्रकार के साहित्य की निर्मिती की ?
3. राही जी के उपन्यासों के मूल विषय क्या हैं ?
4. राही जी के उपन्यासों में किन समस्याओं का चित्रण हुआ है ?
5. राही जी के उपन्यासों में किन सामाजिक आर्थिक तथा राजनैतिक समस्याओं का चित्रण हुआ है ?
6. क्या राही जी ने समस्याओं के समाधान भी सूचित किए हैं ?

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मिले हैं उन्हें उपसंहार में लिख दिया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने इस लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित पाँच अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है -

प्रथम अध्याय है - ''डॉ. राही मासूम रजा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''। इसके अंतर्गत राही जी के जीवन एवं साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। किसी भी व्यक्ति की जीवन दृष्टि उसके भोगे हुए जीवन की उपज होती है। राही जी का जीवन भी इसके लिए अपवाद नहीं। इस अध्याय में उनका जन्म, बचपन, परिवार, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, राही को प्रभावित करनेवाला तत्कालीन, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिवेश, कवि से कथाकार का रूप, अलीगढ़ से निर्वासन और मुंबई आना, मृत्यु और उनके कृतित्व का सामान्य परिचय दिया है। अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मिले निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन''। इस अध्याय के अंतर्गत राही जी के सभी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया है। राही जी के 'आधा गाँव', 'टोपी शुक्ला', 'हिम्मत जौनपुरी', 'ओस की बूँद', 'दिल एक सादा कागज', 'सीन-75', 'कटरा बी आर्जू' आदि उपन्यासों की विषयवस्तु, कथावस्तु और उद्देश्य पर संक्षिप्त विवेचन किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर मिले निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय है- ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ''। इस अध्याय से इस विषय के मौलिक और महत्त्वपूर्ण अध्ययन की शुरूआत होती है। इस अध्याय में राही जी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। इसमें तत्कालीन समाज में पाई जानेवाली सांप्रदायिकता की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, प्रेम-विवाह की समस्या, अवैध संतान की समस्या, विधवा समस्या, वेश्या वृत्ति, विवाह-विच्छेद की समस्या, आत्महत्या की समस्या, दहेज की समस्या, जातिवाद की समस्या, भाषा समस्या, यौन जिजीविषा की समस्या, अंधः विश्वास की समस्या, पारिवारिक समस्या, जमींदारों के शोषण की समस्या आदि का चित्रण किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर मिले निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय है - ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ''। इस अध्याय में राही जी के उपन्यासों में प्राप्त तत्कालीन राजनीतिक समस्याएँ अर्थात युद्ध की समस्या, राष्ट्रीय एकात्मकता की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, प्रशासनिक अव्यवस्था की समस्या आदि का चित्रण किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर मिले निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय है- ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित आर्थिक तथा अन्य समस्याएँ''। इस अध्याय के अंतर्गत राही जी के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक तथा अन्य समस्याओं का चित्रण किया है। राही जी के उपन्यासों में बेरोजगारी की समस्या, दरिद्रता की समस्या, ऋणग्रस्तता की समस्या, भिक्षावृत्ति की समस्या, मूल्य वृद्धि की समस्या, वर्ग-संघर्ष की समस्या आदि आर्थिक समस्याओं का विवेचन किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर मिले निष्कर्ष दिए हैं।

तत्पश्चात् 'उपसंहार' दिया है, जिसमें राही जी के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष मेरे हाथ लगे उन्हें दिया है। इसमें पूर्व विवेचित सभी अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं। उसके बाद आधार-ग्रंथ सूची और संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध राही मासूम रजा के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं पर केंद्रित है। इस दृष्टि से रजा के उपन्यासों में प्राप्त समस्याओं पर स्वतंत्र रूप से संपन्न किया हुआ यह पहला शोध-कार्य है।
2. राही मासूम रजा के उपन्यासों में प्राप्त सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं का चित्रण इसमें सूक्ष्मता से किया गया है।
3. राही के उपन्यासों में प्राप्त फिल्मी दुनिया से संबंधित समस्याओं का इसमें सूक्ष्मता से अंकन किया है।
4. राही के उपन्यासों में चित्रित अनेक समस्याओं के समाधान भी इसमें प्रस्तुत किए गए हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में यह पहला प्रयास है।

ऋणनिर्देश

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले और प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन जी चव्हाण, अध्यक्ष हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के प्रेरक निर्देशन का फल है। यदि आपका मार्गदर्शन न मिलता तो यह कार्य असंभव हो जाता। आपका मार्गदर्शन ही मुझे हर वक्त प्रेरणा तथा बल देता रहा, जिस की वजह से यह कार्य मैं पूर्ण कर सकी। आप हर वक्त काम में व्यस्त रहते, फिर भी समय-समय पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर कर आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन करते। आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना असंभव है। मैं आपके प्रति हरदम कृतज्ञ रहूँगी और भविष्य में भी आपके आशीर्वाद और मार्गदर्शन की कामना करूँगी।

मेरी शिक्षा-दीक्षा की पूर्ति के लिए अनंत कष्ट उठाने वाली मेरी माता सौ. मालन पाटील, पिता तात्यासो पाटील, भाई अनिल, सुनील और राजू की शूभकामनाएँ मेरे साथ रही हैं। साथ ही भाई चि. भूषण और बहनें चारुता, अमृता तथा सौ. अनीता जी चव्हाण इनकी शुभ-कामनाएँ मेरे साथ रही हैं। मेरे पति प्रा. रमेश मोटे जी ने विशेष सहयोग दिया है। उनका सहयोग एवं प्रोत्साहन ही इस कार्य की पूर्ति में आधारभूत रहा है। मैं उनके ऋण में रहना ही पसंद करूँगी।

ग्रंथालयों का सहयोग सामग्री संकलन की दृष्टि से अविस्मरणीय मानना होगा। बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, डी. के. ए. एस्. सी. कॉलेज ग्रंथालय, इचलकरंजी तथा पद्मभूषण डॉ. वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय ग्रंथालय, तासगांव जैसी ग्रंथालयों से मैं अत्यंत लाभान्वित हुई हूँ। अतः इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों की मैं आभारी हूँ।

मा. प्राचार्य व्ही. ए. रानडे जी, डी. के. ए. एस्. सी. कॉलेज, इचलकरंजी, प्रा. एन्. डी. शेंडगे, शिक्षणमहर्षी प. पू. बापूजी साळुंखे महाविद्यालय, मिरज, श्री संभाजीराव पाटील, श्री

स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापुर और भास्कर भवर इन सभी सज्जनों के सहयोग से यह शोध-कार्य पूरा हो पाया है। अतः इनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझती हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध का टंकण अत्यंत सुचारु रूप से करनेवाले श्री. अल्ताफ मोमीन निश्चय ही धन्यवाद के पात्र हैं।

इस शोध-कार्य को संपन्न करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन लोगों का मुझे सहयोग प्राप्त हुआ अंत में उन सबके प्रति आभार प्रकट कर मैं इस लघु शोध-प्रबंध को विनम्रता से परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

Patil A.P.

(कु. अनिता तात्यासो पाटील)

स्थान- कोल्हापुर

तिथि - 29 JUN 2002